



## विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालय के प्रकार एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।

रिचा सोनकर<sup>1</sup>, ममता गुप्ता<sup>2</sup> एवं ज्योति द्विवेदी<sup>3</sup>

<sup>1</sup> शिक्षा संकाय, जे.एस. विश्वविद्यालय, षिकोहाबाद, फिरोजाबाद।

<sup>3</sup> शिक्षक शिक्षा संकाय, आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा।

### षोध सारांष

विश्व का प्रत्येक राष्ट्र उन्नति की प्रतियोगिता में दौड़ रहा है और दूसरे राष्ट्रों से आगे निकल जाने का प्रयास कर रहा है। भारत भी दौड़ में पीछे नहीं है। आणविक अनुसन्धान का क्षेत्र हो या तकनीकी अनुसन्धान का, भारी मशीनरी उद्योग हो या विद्युतीय उद्योग हो, भारत ने विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। एक प्रजातान्त्रिक देश का भविष्य योग्य नागरिकों, नेताओं एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों पर ही निर्भर करता है। अतः अपने गौरव प्रजातन्त्र की रक्षा एवं भौतिक सम्पन्नता के लिए व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करने के लिए सृजनात्मक चिन्तन के अध्ययन की महती आवश्यकता है।

सृजनात्मकता का विकास जहाँ तक माता-पिता व बच्चों के पारिवारिक सम्बन्धों पर निर्भर है। व्यक्ति के परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शिक्षा, देश व समाज के प्रति सेवार्थ, समाज में माता-पिता का स्थान तथा भौतिक साधनों व सुविधाओं का सृजनात्मकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों के बच्चों को सभी शैक्षिक सुविधायें प्राप्त होती हैं। बच्चों की रुचियाँ व रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने के लिए माता-पिता हर सम्भव प्रयास करते हैं। उनका सांस्कृतिक वातावरण उच्च होता है। अतः स्वभावतः ऐसे बच्चों की प्रतिभायें समय व अवसर पाकर प्रस्फुटित हो जाती हैं। जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों के सदस्य निरन्तर जीविकोपार्जन की चिन्ता से चिन्तित रहते हैं। आय-व्यय के साधन संकुचित होने पर माता-पिता भी अपने बच्चों की इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। अतः बच्चे के व्यक्तित्व का विकास व रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास अवरुद्ध हो जाता है। यदि ऐसे बच्चों को भी विद्यालय में परिवार के विकास के सुअवसर प्रदान किये जायें और आरम्भ से उनकी शक्तियों को पहचाना जाये तो निःसन्देह अनेकों कलाकार वैज्ञानिक व कुछ न कुछ करने में समर्थ तथा प्रतिभा सम्पन्न छात्र बन सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालय के प्रकार एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

की-वर्ड :- विद्यार्थी, सृजनात्मकता, सामाजिक-आर्थिक स्तर, व्यक्तित्व।

प्रस्तावना :-

सृजनात्मकता मानव की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। किसी भी राष्ट्र का उत्थान उस राष्ट्र के नागरिकों की सृजनात्मक शक्ति पर आधारित होता है। इसलिए सृजनात्मकता विकासशील देश की अमूल्य निधि एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा व्यक्तिगत उन्नति का अमोघ शस्त्र है। 1930 में इस दिशा में स्पीयरमेन ने अध्ययन शुरू किया था। 1956 में सृजनात्मकता विषय पर प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन नेशनल साइन्स प्रोडक्शन के द्वारा ओवाहा विश्वविद्यालय में किया गया। ओवाहा विश्वविद्यालय में हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में सृजनात्मकता के निष्कर्षों को सार रूप में प्रदर्शित किया।

‘क्रियेटिविटी’ अंग्रेजी शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके समानान्तर विद्यायकता उत्पादन शब्दों का प्रयोग होता है। उत्पादकता में प्रोडक्टिविटी का बोध होता है जो किसी वस्तु के उत्पादन का आभास कराता है। विद्यायकता में एकत्रीकरण का बोध होता है एक ओर शब्द है। खोज से डिस्कवरी के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। ये सभी शब्द सृजनात्मकता के इर्द-गिर्द घूमते हैं, पर उस आशय को पूरा नहीं करते। क्रियेटिविटी के बिल्कुल समानान्तर शब्द सृजनात्मक है। सृजनात्मकता में नवीनता व मौलिकता की सृष्टि करनी पड़ती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के क्षेत्र को देखते हुए जैसा की सर्जनात्मकता के बारे में अभी तक जो ज्ञात हुआ है उस आधार पर हम समझ सकते हैं की सृजनात्मकता मौलिकता तथा नवीनता के अद्भुत गुणों के विकास के लिये महत्वपूर्ण हैं और इससे चिंतन की प्रबल इच्छा प्रखर एवं विकसित होती है। फलतः जटिल से जटिल समस्या का हल सम्भव हो पाता है। इसके अलावा सृजनात्मकता में संवेदनशीलता और गम्भीरता के लक्षण विद्यमान रहते हैं इसलिये यह उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने की क्षमता के विकास में सहायक होती है। और सृजनात्मकता एकाग्रचित्त होकर अत्यन्त शान्त एवं धर्यपूर्ण भाव से कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है। इस कारण

षोडशार्थिनी ने सृजनात्मकता को मुख्य बिन्दु मानते हुए इस पर एक षोडशकार्य करने का निर्णय लिया तथा एक समस्या का चयन भी किया। जो कि आगे के बिन्दु में दर्शायी गयी है।

समस्या कथन— 'विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर विद्यालय के प्रकार एवं उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।'

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा :-

विद्यार्थी – विद्यार्थी से तात्पर्य उन समस्त बालकों से है जो कि किसी विद्यालय में जाकर शिक्षा ग्रहण करते हैं।

सृजनात्मकता –

सृजनात्मकता शब्द का तात्पर्य नए और नवीन विचार, रचनात्मकता और नये आदान-प्रदान से है, जिससे कुछ नया बनाया जाता है। इससे सामाजिक, सांस्कृतिक, या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नए आयाम बनते हैं।

विद्यालय के प्रकार –

विद्यालय के प्रकार से तात्पर्य विभिन्न प्रकार के विद्यालयों से है जैसे— निजी विद्यालय, सरकारी विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, आदर्श विद्यालय, विद्या मन्दिर, हिन्दी माध्यम विद्यालय और अंग्रेजी माध्यम विद्यालय इत्यादि।

सामाजिक-आर्थिक स्तर –

यहां सामाजिक-आर्थिक स्तर से तात्पर्य समाज और अर्थिक तत्वों के बीच सम्बन्धत से है, जिसमें समाज में व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति और सामाजिक समरसता का मूल्यांकन होता है।

अध्ययन के चर :-

स्वतन्त्र चर – विभिन्न प्रकार के विद्यालय एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर।

परतंत्र चर – सृजनात्मकता।

अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।
4. स्ववित्तपोषित विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है—

1. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
3. सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
4. स्ववित्तपोषित विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन का सीमांकन :-

1. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल फिरोजाबाद जिले के चार प्रकार के विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
2. विद्यार्थियों के चयन में छात्र तथा छात्राओं का अन्तर नहीं रखा गया है।
3. सृजनात्मकता पर स्कूल के प्रकार के प्रभाव को दृष्टिगत रखा गया है।
4. सृजनात्मकता पर सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को दृष्टिगत रखा गया है।
5. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों में अन्तर नहीं रखा गया है।
6. सृजनात्मकता को ज्ञात करने के लिए बाकर मेंहदी के द्वारा निर्मित परीक्षण प्रयोग किया गया है।

अध्ययन विधि :-

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि से किया गया है।

न्यादर्श :-

प्रस्तुत शोध के लिए 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श के चयन हेतु वर्गीकृत यादृच्छिक विधि को अपनाया गया।

1. फिरोजाबाद जिले के पब्लिक विद्यालय से 150 विद्यार्थियों को लिया गया।

2. फिरोजाबाद जिले के केन्द्रीय विद्यालय से 150 विद्यार्थियों को लिया गया।
3. फिरोजाबाद जिले के सरकारी विद्यालय से 150 विद्यार्थियों को लिया गया।
4. फिरोजाबाद जिले के स्वतंत्रपोषित विद्यालय से 150 विद्यार्थियों को लिया गया।

उपकरण :-

अध्ययन के उपकरण के रूप में बाकर मेंहदी द्वारा निर्मित "सृजनात्मक चिन्तन का षड्दिक परीक्षण" का प्रयोग किया गया तथा प्रदत्तों के विप्लेशण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' टेस्ट सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विप्लेशण एवं व्याख्या :-

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का विप्लेशण निम्नलिखित है-

तालिका संख्या-1

पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	150.64	20.23	0.68	सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	147.83	19.86		

उपरोक्त तालिका संख्या-1 में पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि इन दोनों का 'टी' मूल्य 0.68 है, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या-2

केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	151.96	19.75	0.79	सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	151.87	19.92		

उपरोक्त तालिका संख्या-2 में केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि इन दोनों का 'टी' मूल्य 0.79 है, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या-3

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	150.67	24.12	0.75	सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	153.17	22.26		

उपरोक्त तालिका संख्या-3 में सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि इन दोनों का 'टी' मूल्य 0.75 है, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

## तालिका संख्या-4

स्ववित्तपोषित विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धोन्मुखी प्रेरणा का अध्ययन

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता स्तर
उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	149.73	23.18	0.36	सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी	75	149.32	16.02		

उपरोक्त तालिका संख्या-4 में स्ववित्तपोषित विद्यालय के विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य उपलब्धोन्मुखी प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि इन दोनों का 'टी' मूल्य 0.68 है, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से अन्तर नहीं रखती है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिणाम-

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामस्वरूप निम्न षोडश परिणाम प्राप्त हुए हैं-

1. इस अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि पब्लिक स्कूल के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता लगभग समान है। इसलिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
2. इस अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि केन्द्रीय विद्यालयों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता लगभग समान है। इसलिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
3. इस अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सरकारी विद्यालयों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता लगभग समान है। इसलिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
4. इस अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि स्ववित्तपोषित विद्यालयों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता लगभग समान है। इसलिये परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष-

षोडश परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालती है कि पब्लिक स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय, सरकारी विद्यालय तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सांख्यिकीय के नजरिये से कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर, ए0बी0 एवं भटनागर मीनाक्षी (2004), 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन', आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. कपिल, एस0के0 (2004), 'अनुसंधान विधियाँ', एकादश संस्करण, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा।
3. कुमार, गिरिजेश (1978). सृजनात्मक चिन्तन का व्यक्तित्व वैल्यू ओरिन्टेशन तथा निरपेक्ष प्रेरणा के सम्बन्ध का अध्ययन, वाल्यूम-2, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद, एजूकेषन रिव्यू।
4. सिसिरेली (1982). सृजनात्मकता का उपलब्धि पर प्रभाव संदर्भित इन रेनू जैन, लघुषोध प्रबंध, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
5. अम्बिली रमेश (2013), न्यू टीचिंग, एन एफिषियेन्ट टैकनिक फॉर लर्निंग इफेक्टिव टीचिंग, जनरल ऑफ रिसर्च मेड, साइंस, पृष्ठ 158-163, वी-18(2)।
6. द्विवेदी, ज्योति (2023) - अनुसूचित जाति के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन, जे.ई.टी.आई.आर., 1830-1832, 10(8)।